SAGAR

भवतु सब्बमंगलं

समपूर्ण अम्बेडकरवाद केवल बुद्ध धम्म के साथ

COMPLETE AMBEDKARISM, ONLY WITH BUDDHISM

Social Action Groups for Ambedkarite Reform (SAGAR)

Office: 1039, Deep Complex, Hallo Majra, (Chandigarh)

Tel.: 09354818711, 09417302104, 09818063185

सम्यक विचार

निःशुल्क वितरण

दलित युवाओं को मेरा पैगाम है कि एक, तो वे शिक्षा और बुद्धि में किसी से कम न रहें। दूसरे, ऐशों–आराम में न पड़कर समाज का नेतृत्व करें। तीसरे, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी संभाले तथा समाज को जागृत और संगठित कर उसकी सच्ची सेवा करें।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर

मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ, यह मेरे बस की बात नहीं थी, परन्तु मैं हिन्दू के रूप में मरूंगा नहीं, यह मेरे बस की बात है।

* * * *

डॉ. भीम राव अम्बेडकर

हमारे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी कमाई का 5% हिस्सा समाज उत्थान के लिए दान करना चाहिए।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर

वन्दना

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स।

{मैं उन सभी को नमस्कार करती हूँ/करता हूँ जो अरहत (राग, द्वेष, मोह, लोभ से मुक्त) और सम्यक सम्बुद्ध (सम्पूर्ण जागृत) हो गये हैं।}

त्रि–शरणगमन

बुद्धं सरणं गच्छामि।

धम्मं सरणं गच्छामि।

संघं सरणं गच्छामि।

{मैं बुद्ध की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।
मैं धम्म की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।
मैं संघ की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।}

दुतियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि।

दुतियम्पि, धम्मं सरणं गच्छामि।

दुतियम्पि, संघं सरणं गच्छामि।

{दूसरी बार भी, मैं बुद्ध की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।
दूसरी बार भी, मैं धम्म की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।
दूसरी बार भी, मैं संघ की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।}

ततियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि।

ततियम्पि, धम्मं सरणं गच्छामि।

ततियम्पि, संघं सरणं गच्छामि।

{तीसरी बार भी, मैं बुद्ध की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।
तीसरी बार भी, मैं धम्म की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।
तीसरी बार भी, मैं संघ की शरण में जाती हूँ/जाता हूँ।}

पंचशील

पाणातिपाता वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
अदिन्नादाना वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
कामेसु मिच्छा चारा वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
मुसावादा वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
सुरा—मेरय मज्जपमा दट्ठाणा वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।

{ मैं बिना किसी कारण के किसी प्राणी की हत्या नहीं करूंगी/नहीं करूँगा/ऐसी शिक्षा ग्रहण करती हूँ/करता हूँ

मैं चोरी नहीं करूंगी/करूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करती हूँ/करता हूँ।

मैं व्यभिचार नहीं करूंगी/करूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करती हूँ/करता हूँ।

मैं झूठ नहीं बोलूंगी/बोलूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करती हूँ/करता हूँ।

मैं शराब, आदि नशीलें पदार्थो का सेवन नहीं करूंगी/करूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करती हूँ/करता हूँ।}

(यही त्रिशरण, पंचशील ग्रहण करना बौद्ध दीक्षा विधि है और यही बौद्ध गृहस्थों अथवा उपासकों के नित्यशील भी है।)

जाति

- मनुष्य के स्पर्श से भी छूत मानना, ऐसी शिक्षा जिस संस्कृति में है, उसे कलंकित संस्कृति के सिवाय और क्या कहें।
- जातिभेद और धर्मभेद जैसे संकीर्ण विचारों के कारण ही इस देश की एकता नष्ट हुई।
- बहुत सारे ब्राह्मण आपसे जातिवाद के मामले पर सौदेबाजी करने आगे आयेगें।
- जब तक गीता एवं कृष्ण है, तब तक जातिवाद का अन्त होने वाला नहीं है।
- अस्पृश्यता की जड़ तो जाति है और जाति का मूल है वर्णाश्रम जो ब्राह्मणवाद की देन है।
- जातिप्रथा को समाप्त किये बिना अस्पृश्यता के अंत की आशा करना बालू की दीवार खड़ी करने जैसा है। यह विचार कि जातिप्रथा और अस्पृश्यता दोनों अलग–अलग हैं, एक दिव्य स्वप्न है। दोनों एक ही है, जिन्हें अलग नही किया जा सकता है। अस्पृश्यता, जातिप्रथा का ही परिणाम है। दोनों का चोली दामन का साथ है।
- चाहे आप किसी भी दिशा में देखे, जाति एक ऐसा दैत्य है, जो आपके मार्ग मे खड़ा है। आप जब तक इस दैत्य को नहीं मारोगे, आप न कोई राजनीतिक सुधार कर सकतें हैं न कोई आर्थिक सुधार।
- जातिप्रथा से आर्थिक उन्नति नहीं होती। जातिप्रथा से न तो नस्ल या प्रजाति में सुधार हुआ है और न ही होगा। लेकिन इससे एक बात अवश्य सिद्ध हुई है कि इससे भारतीय समाज पूरी तरह छिन्न–भिन्न और हताश हो गया है।

- नीचता क्रूरता से भी अधिक निंदनीय है।
- जातिप्रथा को समाप्त करने का वास्तविक उपाय तब तक नही होगा, जब तक लोग अपने आचरण में परिवर्तन नहीं करेगें, जब तक वे शास्त्रों की पवित्रता में विश्वास करना नहीं छोंड़ेगे, जिस पर उनका आचरण आधारित है।
- आपकों हिन्दुओं से यह कहने का साहस रखना चाहिए कि दोष उनके धर्म का है–वह धर्म जिसनें आपमें यह धारणा पैदा की है कि जाति–व्यवस्था पवित्र है। क्या आप ऐसा साहस दिखा पाएंगे?
- जाति–व्यवस्था का आधार ईश्वरीय है। आपको ईश्वरीय पवित्रता और देवता को नष्ट करना होगा, जो जाति–व्यवस्था में समाया हुआ है। अंतिम विश्लेषण के रूप में इसका अर्थ यह है कि आपकों शास्त्रों और वेदों की सत्ता समाप्त करनी होगी।
- जाति का जन्म धर्म से हुआ है। धर्म ने उसको प्रतिष्ठित किया और पवित्रता प्रदान की। इस कारण यह कहना उचित है कि धर्म ही वह पक्की नींव है जिस पर हिन्दुओं ने अपने सामाजिक ढांचे की रचना की है।
- जाति व्यवस्था संसार भर में भारत ही की एक बीमारी है।
- मान–सम्मान, अधिकार एवं व्यवसाय के बारे में जाति बीच में नही आनी चाहिए। कोई भी अंतर केवल व्यक्ति के गुणभेद के कारण होना चाहिए, जन्म से किसी भी प्रकार का भेद नहीं होना चाहिए।

धम्म/धर्म

- मैं आर्थिक प्रगति का विरोधी नहीं हूँ। गरीबों का जीवन कितना कष्टमय होता है, इसका मुझे अनुमान है। किन्तु आर्थिक उन्नति के साथ मानसिक उन्नति होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, और धम्म ही उसका सबसे उत्तम मार्ग है।
- मनुष्य मात्र के विकास के लिये धम्म की अत्यावश्कता है, ऐसा मेरा मत है। शरीर के साथ मनुष्य के पास दिमाग (मन) भी है। जैसे शरीर का पोषण किया जाता है उसी तरह दिमाग भी सचेत, सुसभ्य,सम्यक तथा स्वस्थ्य होना चाहिए।
- जो धर्म (हिन्दू धर्म) हमारी चिंता नहीं करता उस धर्म की हम भी चिंता क्यों करें?
- केवल जिंदा रहने की कोई कीमत नहीं। इंसान इज्जत के साथ जी रहा है या नहीं महत्व इस बात का है।
- धर्म मनुष्य के लिए है मनुष्य धर्म के लिये नहीं।
- सम्मान प्राप्त करना है तो धर्मान्तरण करो।
- संगठन बनाना है तो धर्मान्तरण करो।
- समता प्राप्त करनी है तो धर्मान्तरण करो।
- स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है तो धर्मान्तरण करो।
- जो धर्म तुम्हें इन्सान नहीं समझता उस धर्म में तुम क्यों रहते हो?
- जो धर्म तुम्हें शिक्षा नहीं लेने देता उस धर्म में तुम्हें रहने से क्या लाभ? तुम उस धर्म में क्यों रहते हो ?
- जो धर्म पग–पग पर तुम्हें अपमानित करता है उस धर्म में तुम क्यों रहते हो ?
- जिस धर्म में मनुष्य के साथ मानवता से व्यवहार करने की मनाही है वह धर्म नहीं अधर्म का बोझ है।

- जिस धर्म में पशु का स्पर्श ठीक है परन्तु मनुष्य का ठीक नहीं वह धर्म न होकर पागलपन है।
- जो धर्म एक वर्ण को कहता है विद्या प्राप्त न करो, धन संचय न करो, शस्त्र धारण न करो, वह धर्म न होकर मनुष्य के जीवन की विडम्बना है। जो धर्म अशिक्षितों को अशिक्षित रहों, निर्धन को निर्धन रहो ऐसा पाठ पढ़ाता है वह धर्म नहीं सजा है
- चीटियों को शक्कर डालने वाले तथा मनुष्यों को पानी से भी प्यासा मारने वालें लोग पाखण्डी हैं उनका साथ न दो।
- हिन्दू जिसे धर्म कहते हैं, वह सामाजिक आदेशों और निषेधों का पुलिंदा है।
- मुझे हिन्दू और हिन्दू धर्म से ऊब होती है तो इसलिए कि मुझे विश्वास है कि वे गलत सिद्धांतों और गलत सामाजिक जीवन का पोषण करते हैं।
- धर्म विज्ञान और तर्क के अनुकूल होना चाहिए।
- न तो ईश्वर और न ही आत्मा संसार को बचा सकते हैं।
- ब्राह्मणों ने अपना पेट भरने हेतु, अस्तित्व, गुण, कार्य, ज्ञान और शक्ति के बिना ही देवताओं की रचना करके हंसी मजाक का विषय बना दिया।
- इंगलैंड में ब्राह्मण, शूद्र या अछूत कोई भी नहीं है, रूस में वर्णाश्रम या धर्म या भाग्य भी नहीं है, अमेरिका में लोग ब्रह्मा के मुख या पैरों से पैदा नहीं होते, जर्मनी में भगवान खाना भी नहीं खाते, तुर्की में भगवान की शादी भी नहीं करतें, इन देशों में लोग विद्वान और बुद्धिमान है, वे अपना आत्म सम्मान खोना नहीं चाहते। वहां उनका ध्यान अपने अधिकार व देश की सुरक्षा की ओर है। हमारे देश को बर्बर देवता और धार्मिक हठधर्मी क्यों चाहिए?
- हमारे देश के लोगों ने शिष्टता और महत्व खो दिया है क्योंकि इनकी आदत पत्थर की मूर्ति या देवता की प्रशंसा करने की है, और मनुष्य पशु की तरह सारी बातें मान रहा है।

- उस देवता को नष्ट कर दो जो तुम्हें शूद्र कहे, उन पुराणों और इतिहास को भी ध्वस्त कर दो, जो देवता को शक्ति प्रदान करते हैं।
- हजारों सालों से चली आ रही आप लोगों की दुखदायी दुर्दशा का कारण क्या है? आप लोगों के दुखों और दुर्दशा का मुख्य कारण है हिन्दू धर्म यानी ब्राह्मण धर्म।
- आज के बाद 'शूद्र' शब्द को इतिहास में जगह मत दो, हमें इस शब्द के लिए शब्दकोश ओर विश्वकोश में जगह ही नहीं देनी चाहिए।
- प्रार्थना क्या है? नारियल तोड़ना क्या है? क्या इसमें ब्राह्मण को धन देना होता है? ब्राह्मण के पैरो में क्यों पड़ना होता है? क्या ये त्योहार है? क्या यह भवन मन्दिर है? नहीं, यह सब कुछ भी नहीं, बस हमारे व्यवहार है। हमें बुद्धिमान व्यक्ति की तरह व्यवहार करना चाहिए यही प्रार्थना का सार है।
- गरीबों की सहायता करके हम उनकी गरीबी दूर करने में सहायक हो सकते हैं। धर्म के नाम पर भंडारे में खाना बांटने से गरीबी दूर नहीं होगी।
- धम्म एक सामाजिक शक्ति है।
- यदि किसी विशेष समय, किसी विशेष समाज में सत्ता और प्रभुत्व का स्रोत सामाजिक अथवा धार्मिक है, तब सामाजिक व धार्मिक सुधार एक आवश्यक सुधार के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।
- गांधी एक कट्टर सनातनी हिंदू राजनीतिज्ञ थे। वह हिंदू धर्म के दो बडे स्तम्भों–यानि ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद को गिराना नहीं चाहते थे बल्कि वह इनके प्रशंसक व संरक्षक थे।
- हिन्दुओं की गिनती उन कपटी, दुष्ट व विश्वासघाती लोगों में की जा सकती है जिनकी कथनी–करनी में जमीन आसमान का अन्तर है।

- पढ़ने की लालसा और धम्म का आचरण यह दोनों मेरे मानसिक शरीर की आंखें हैं।
- हिन्दू लोगों की धर्म की व्याख्या बहुत निराली है। मन्दिर में जाना, घंटा बजाना, पूजा करना और पुजारी को पैसे देना, बस इतना ही इनका धर्म है। जैसे कि पुजारी के बाप का कर्जा चुकाना हो।
- शंकर के नाम से लोग प्रत्येक सोमवार को उपवास रखकर शंकर के पिंड को विविध प्रकार से पूजते है। शंकर का पिंड (लिंग) क्या चीज है, इसका किसी ने विचार किया है क्या? वह और कुछ न होकर, स्त्री—पुरूष के संभोगक्रिया की प्रतिमा है। क्या इस प्रकार की अश्लील प्रतिमा का हमें प्रचार करना चाहिए?
- इस संसार में ईश्वर है अथवा नहीं इसका विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं। संसार में जो भी हलचल होती है वह सब इन्सान ही करते हैं। स्वार्थी लोग दूसरे असंख्य लोगों को अज्ञान के अंधकार में रखकर उन्हें ईश्वर के बारे में झूठी कल्पनाओं के पीछे लगाकर और उनके धार्मिक भोलेपन का लाभ उठाकर अपना हित साधते हैं।
- सभी मनुष्य एक ही मिट्टी के बने हुए है और उन्हें यह अधिकार है कि वे अपने साथ अच्छे व्यवहार की मांग करें।
- अवतारवाद, स्वर्ग, नरक, भाग्य, भगवान, पुनर्जन्म सब काल्पनिक हैं। हमें इन्हें नहीं मानना चाहिये।
- हिन्दू धर्म और जाति प्रथा से पूँजीवाद को बढ़ावा मिलता है।
- मैंने आपके लिए मकान का निर्माण कर दिया है अब यह आप की जिम्मेदारी है कि आप इसे अच्छी दशा में बनाये रखें।

धार्मिक प्रचार

- प्रत्येक धर्म को धन दौलत और प्रचार ही जीवन देते हैं उनके अतिरिक्त कोई दैवीय या अलौकिक शक्ति नहीं, जो धर्म को जिन्दा रख सके।
- धम्म–प्रचार का कार्य बिना मनुष्यों और बिना धन संभव नहीं।
- एक अच्छा बौद्ध होना ही किसी का कर्त्तव्य नहीं है। बल्कि उसका कर्त्तव्य है कि वह बौद्ध धम्म का प्रचार भी करें। उन्हें यह मानना ही होगा कि बौद्ध धम्म का प्रचार करना ही वास्तविक मानवता की सेवा करना है।
- बौद्धों को अपना स्वार्थ त्यागकर अपनी कमाई का 5 प्रतिशत हिस्सा धम्म के लिए दान करना चाहिए।
- बौद्धों का यह कर्त्तव्य है कि वे प्रत्येक रविवार को बौद्ध विहार में जाएं। अन्यथा उन्हें धम्म का ज्ञान नहीं होगा।
- बौद्ध धम्म का प्रचार –प्रसार करना प्रत्येक बौद्ध का कर्तव्य है इस बात को सभी बौद्धों को याद रखना चाहिए।
- बौद्ध धम्म का प्रचार–प्रसार करना अर्थात मानव सेवा करना है, इस विश्वास को मन में रखकर कार्य किया तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी।

धार्मिक मतभेद

- सभी धर्मो में आपस में बहुत सारी बातों पर मतभेद और वाद–विवाद है। वे सब इस बात पर भी सहमत नहीं कि स्वर्ग–नरक, आत्मा–परमात्मा, मोक्ष और परलोक में पहुँचने का एक ही रास्ता है, सभी अलग–अलग व्याख्या देते हैं।

बौद्ध धम्म

- बौद्ध धम्म के उदय से सामाजिक क्रांति हुई।
- बुद्ध ने जातिप्रथा के विरूद्ध केवल प्रचार ही नहीं किया, अपितु तथाकथित शूद्र तथा निम्न जाति के लोगों को भिक्खु का दर्जा दिलाया।
- दुःख निवारण के लिए बौद्ध धम्म का मार्ग ही सुरक्षित मार्ग है। बौद्ध धम्म पूर्णतः भारतीय है और भगवान बुद्ध न केवल भारत के उद्धारक थे बल्कि संपूर्ण मानवता के उद्धारक थे।
- बौद्ध धम्म स्वतंत्रता, समानता और भातृत्व–भाव के बुनियादी सिद्धांतों को मान्यता देता है।
- धम्म गरीबी को न तो पवित्र मानता है, न उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाता है।
- धर्म की बाबत सबसे ज्यादा हानिकारक धारणा यह है कि सभी धर्म समान रूप से उत्तम हैं और उनमें भेद करनें की कोई आवश्यकता नहीं। इससे बड़ी गलती कोई दूसरी नहीं हो सकती।
- बौद्ध धम्म के सांस्कृतिक आंदोलन को कुंद व धूमिल करने के लिए ब्राह्मणों ने भगवान बुद्ध को विष्णु का अवतार बना डाला। यह षडयंत्र पागलपन के सिवाय कुछ नही।
- बौद्ध धम्म का उदेश्य जगत की उत्पति की व्याख्या करना नहीं है, धम्म का उदेश्य जगत का नवनिर्माण करना है।
- संसार के कष्टों व दुःखों का निराकरण करनें के लिऐ बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग निर्धारित किया। इस अष्टांगिक मार्ग के तत्त्व इस प्रकार है –

  1. सम्यक दृष्टि अर्थात अंधविश्वास से मुक्ति।
  2. सम्यक संकल्प अर्थात जो बुद्धिमान तथा उत्साहपूर्ण व्यक्तियों के द्वारा किया जाता है।

3. सम्यक वचन अर्थात दयापूर्ण, स्पष्ट तथा सत्यभाषण।
4. सम्यक आचरण अर्थात शांतिपूर्ण, ईमानदारी तथा शुद्ध आचरण।
5. सम्यक जीविका अर्थात किसी भी जीवधारी को किसी भी प्रकार की क्षति या चोट पहुंचाए बगैर जीविका कमाना।
6. सम्यक व्यायाम अर्थात अन्य सात बातों में सम्यक परीक्षण।
7. सम्यक स्मृति अर्थात एक सक्रिय तथा जागरूक मस्तिष्क।
8. सम्यक समाधि अर्थात् जीवन के गंभीर रहस्यों के संबध में गंभीर विचार।

इस अष्टांगिक मार्ग का उद्देश्य पृथ्वी पर धर्मपरायण तथा न्यायसंगत राज्य की स्थापना कर संसार के दुःख तथा विवादों को मिटाना है।

- इस देश में धम्म कार्य को करने के लिए भिक्खु गण नहीं है, इसलिये आप में से हर एक को बौद्ध धम्म की दीक्षा लेनी है। बौद्ध धर्मावलम्बी व्यक्ति द्वारा अन्य लोगों को भी यह दीक्षा देने का पूर्ण अधिकार है।
- बौद्ध धम्म की दीक्षा लेने के बाद आप लोग हिन्दू धर्म के विचार और हिन्दू देवी—देवताओं को बौद्ध धम्म में नहीं लाये।
- जिस प्रकार से गन्ना जड़ में भी मीठा होता है मध्य में भी मीठा होता है एवं टोक पर भी मीठा होता है, उसी प्रकार से बौद्ध धम्म प्रारम्भ में भी कल्याणकारी, मध्य में भी कल्याणकारी तथा अंत में भी कल्याणकारी है। इस धर्म का आदि, मध्य और अंत सभी बहुत हितकारी तथा कल्याणकारी है।
- मुझे धम्म चाहिए, परंतु धम्म का ढोंग नहीं।
- बौद्ध संघ नियम जानता था और उन नियमों का वह पालन करता था। बैठने की व्यवस्था, प्रस्ताव रखने के नियम, निर्णय, कार्यवाही प्रांरभ करने के लिए आवश्यक गणपूर्ति, पार्टी की ओर से आदेश जारी करना, मतपत्र द्वारा मतदान करना, मतगणना, आपात सूचना, नियमितता, न्याय—व्यवस्था इत्यादि नियम उनके पास थे।

धर्म की आवश्यकता

- मनुष्य बुद्धि और अनुभव से सीखता है तथा अपनी संवेदनशील इन्द्रियों की मार्फत भी बहुत सी बातें सीखता है। परन्तु धर्म जो किसी भी प्रयोग की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, तो फिर संसार के लिए उसकी जरूरत ही क्या है?
- हिन्दू धर्म ध्वस्त होना चाहिए या हमें इससे छुटकारा पा लेना चाहिए, इसी में हमारी भलाई है।
- आर्यों ने हमारे ऊपर अपना धर्म थोपकर, असंगत, निरर्थक और अविश्वसनीय बातों में हमें फंसाया। अब हमें इन्हें छोड़कर ऐसा धर्म ग्रहण कर लेना चाहिए जो मानवता की भलाई में सहायक सिद्ध हो।
- विदेशों में लोग, धर्म और भाषा को मिश्रित नहीं करते।
- विकास और परिवर्तन बुद्धि के अनुसार ही होते हैं, धार्मिक गुरू या पंडित की भविष्यवाणी पर आधारित नहीं होते।
- प्रत्येक धर्म गुरू अपने धर्म को हजारों वर्ष पुराना ही नहीं, बल्कि सनातन बताते हैं, और यह भी बताने से नहीं चूकते कि उनके धर्म का प्रचार स्वयं उनके ईश्वर ने किया था, उन्हें सदैव यही चिन्ता सताती रहती है कि उनके धर्म का प्रचार नियमित रूप से चलते रहना चाहिए, नहीं तो धर्म लुप्त हो जायेगा, और यह स्थिति प्रत्येक धर्म की है।
- धर्म एक संस्था है। एक प्रभाव है और समस्त सामाजिक प्रभावों व संस्थाओं की भांति यह किसी समाज की, जो उसकी पकड़ में आता है उसको बना–बिगाड़ सकता है। यह उसकी सहायता कर सकता है और उसे हानि पहुंचा सकता है।

- धर्म एक सामाजिक शक्ति है, इस तथ्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता।
- इतिहास इस बात का गवाह है कि राजनीतिक क्रांतियां हमेशा सामाजिक और धार्मिक क्रांतियों के बाद हुई हैं।
- धर्म क़ी प्रकृति, प्रेम का पोषण और दूसरों की सहायता करने वाली होनी चाहिए। धर्म का स्वभाव मनुष्य को सच्चाई के मार्ग पर ले जाने वाला होना चाहिए। एक ऐसा धर्म जिसमें उपरोक्त गुणों का समावेश हो, संसार को आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त धर्म का कोई प्रयोजन नहीं है।
- संसार के तकरीबन सभी धर्म अच्छे समाज की रचना के लिए बताये जाते हैं परन्तु हिन्दू–आर्य, वैदिक धर्म में हम यह अन्तर पाते हैं कि यह धर्म एकता और मैत्री के लिए नहीं है।

धार्मिक दलाली

- ब्राह्मण आपको भगवान के नाम पर मूर्ख बनाकर अन्धविश्वास में निष्ठा रखने के लिए तैयार करता है और स्वयं आरामदायक जीवन जी रहा है, तथा तुम्हें अछूत कहकर निन्दा कर रहा है। देवता की प्रार्थना करने के लिए दलाली करता है। मैं इस दलाली की निन्दा करता हूँ और आपको भी सावधान करता हूँ कि ऐसे ब्राह्मणों का विश्वास न करो।

शिक्षा

- अपने गरीब एवं अज्ञानी भाईयों की सेवा करना प्रत्येक शिक्षित का प्रथम कर्त्तव्य है। बड़े अधिकार के पद पाते ही ये शिक्षित भाई अपने अशिक्षित भाईयों को भूल जाते हैं। यदि उन्होने अपने इन असंख्य भाईयों की ओर उचित ध्यान नहीं दिया तो अपने समाज का पतन निश्चित है।
- अपने बाल–बच्चों को पाठशाला जरूर भेजें। उन्हें शिक्षित बनाओ। शिक्षा के बिना अब कोई चारा नहीं अथवा सुधार की कोई संभावना नहीं।
- शिक्षा शेरनी के दूध के समान है, जिसे पीकर हर व्यक्ति दहाड़ने लगता है।
- आप इज्जत से रहो और इज्जत के साथ जिंदा रहो।
- शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचानी चाहिए। शिक्षा सस्ती से सस्ती हो जिससे निर्धन व्यक्ति भी शिक्षा प्राप्त कर सके।
- शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। अतः शिक्षा के दरवाजे प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए खुले होने चाहिए।
- राजनीति जितना ही शिक्षण संस्थानों का भी महत्व है। किसी समाज की प्रगति उस समाज के बुद्धिमान, कर्मठ और उत्साही युवकों पर ही निर्भर होती है, यह आप लोगों को याद रखना चाहिए।
- मैंने जिस प्रकार से विद्या प्राप्त की, आप भी प्राप्त कीजिए। परंतु केवल परीक्षा पास करने तथा पद्वी प्राप्त करने से शिक्षा का क्या उपयोग?
- आप लोगों को याद रखना चाहिए कि, कोई समाज जागृत, सुशिक्षित और स्वाभिमानी होगा तभी उसका विकास होगा।

सामाजिक विचार

- हमें कानूनी स्वतंत्रता से अधिक सामाजिक स्वतंत्रता की आवश्यकता है। जब तक उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता नहीं मिलती तब तक कानून द्वारा कितनी भी स्वतंत्रता बहाल की जाए, फिर भी उसका कोई विशेष उपयोग नहीं होगा।
- अगर देवता ही हमें निम्न जाति बनाने का मूल कारण है, तो ऐसे देवता को नष्ट कर दो, अगर यह धर्म है तो इसे मत मानों, अगर मनु धर्म, गीता या अन्य कोई पुराण आदि है तो इन्हे भी नष्ट कर दो। अगर यह मन्दिर, तालाब या त्योहार है तो इनका बहिष्कार कर दो। अन्त में अगर हमारी राजनीति ऐसा करती है तो इसका खुले रूप से पर्दाफाश करो।
- तुम्हारे ये दीन–दुखी चेहरे देखकर तथा करूणाजनक शब्द सुनकर मेरा दिल टूटने लगता है। कितनी देर से तुम लोग अत्याचारों की चक्की में पिसे जा रहे हो। फिर भी तुम्हारी यही भावना है कि तुम्हारी यह दुर्दशा ईश्वर की देन है।
- तुम अपने मां के गर्भ में ही क्यों नहीं मर गए ? तुम अपने दयनीय, घृणित और तिरस्कारपूर्ण जीवन से पृथ्वी पर बोझ क्यों बढ़ाते हो? अब भी मर जाओ तो तुम संसार पर बड़ा ही उपकार करोगे।यदि तुम नया जीवन नहीं ढाल सकते और अपनी स्थिति नहीं सुधार सकते तो इससे मरना ही बेहतर है।
- अन्य इन्सानों की तरह तुम भी इन्सान हो। तुम्हें भी अच्छा भोजन, वस्त्र और मकान पाने का जन्मसिद्ध अधिकार है। यदि तुम्हें स्वाभिमान से जीना है तो आत्मनिर्भरता और आत्मभरोसा ही तुम्हारी उन्नति का मार्ग है इसका पूरा ध्यान रखो।
- जिनका उद्देश्य छुआछूत समाप्त करना और अछूतों का सामाजिक दर्जा बढ़ाकर उनको हिन्दू समाज में समाहित करना था ऐसे कई महात्मा इस देश में आए और गए, पंरतु अछूत समाज अभी भी जहां था वहीं पर है।

- प्रत्येक कार्यकर्ता धैर्यशील होना चाहिए। जो धैर्यशील नहीं वह नेता नहीं हो सकता।
- जो मनुष्य मरने को तैयार होता है वह कभी नहीं मरता और जो मरने से डरता है वह पहले ही मरा हुआ होता है।
- आवश्यक धनबल हमें स्वयं ही जुटाना चाहिए यदि यह दूसरों से प्राप्त किया तो उनके दबाव में काम करना पड़ेगा।
- आप लोग कितना आगे जा रहे हो ? इसकी अपेक्षा कौन–सी दिशा में जा रहे हो, यह महत्वपूर्ण है।
- पंढरपुर, त्र्यंबक, काशी, हरिद्वार आदि की यात्रा करके या एकादशी, सोमवार इत्यादि के व्रत करके या शनि, महात्मा, शिवलीलामृत, गुरूचरित्र इत्यादि पोथियों का जाप करने से भी आप लोगों का उद्धार नहीं होगा। आपके पूर्वज भी हजारों वर्षों से ये सब करते आए हैं, फिर भी आप लोगों की दयनीय स्थिति में जरा भी फर्क पड़ा है क्या ?
- हमारा समुदाय भी जाति की बीमारी से ग्रस्त है। जब आप दूसरों से छुआछूत मिटाने की माँग करते हो तो अनुसूचित जातियों के बीच अपने आन्तरिक विभाजन और आपसी भेदभाव को मिटाने की आपकी जिम्मेदारी तो और भी ज्यादा बढ़ जाती है।
- हिंदू सभ्यता तथा संस्कृति एक सड़े हुए बदबूदार तालाब की तरह है, यदि भारत ने प्रगति करनी है तो यह ढकोसला जड़मूल से खत्म करना होगा।
- ब्राह्मणों द्वारा फैलाए गए हीन विचारों को तिलांजलि दिए बिना भारत का कोई भविष्य नहीं है।
- हिन्दू, अस्पृश्यों को गुलामों की स्थिति से भिन्न उन स्थिति में अपना मानतें हैं, जिनसे उनके स्वार्थ पूरे हों।
- अस्पृश्य, सामाजिक व्यवस्था के किसी लाभ के अधिकारी होने का दावा नहीं कर सकते। उन्हें सामाजिक–व्यवस्था की सभी मुसीबतों को स्वयं ढोने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है।
- हिंदू समाज में असमानता हिन्दू धर्म का प्राण है।

- संसार में किसी आध्यात्मिक वर्ग ने इतना विश्वासघात नहीं किया जितना भारत में ब्राह्मणों ने किया है।
- मैं अन्याय, अत्याचार, आडम्बर तथा पाखंड से घृणा करता हूं। और मेरी घृणा उन सब लोगों के प्रति है जो उनके दोषी है।
- तुम्हें मेरी पीड़ाओं, दुःखों और परिश्रम का अनुमान नहीं। जब मैंने जनसेवा का काम शुरू किया तो मेरे पास कुछ नहीं था। कोई और होता तो कब का मिट गया होता।
- यदि आप जाति प्रणाली में दरार पैदा करना चाहते हो तो तुम्हें उन वेदों ओर शास्त्रों को अपने जीवन से निकालना होगा, जो तर्क को स्थान देने के विरूद्व हैं। उन वेदों और शास्त्रों के प्रभाव को समाप्त करना होगा जो सदाचार को स्थान देने के विरूद्ध हैं, तुम्हें श्रुतियों और स्मृतियों का धर्म नष्ट करना होगा। मैं सभी वर्गों की स्थिति से भली–भांति परिचित हूं। पिछड़ों तथा अछूतों के अधिकारों में कोई विशेष अंतर नहीं है। दोनों की एक–सी समस्याएं हैं। मैं जहां अछूतों के अधिकारों की सुरक्षा की व्यवस्था करूंगा वहीं पिछडे वर्ग भी उन्हीं के साथ होंगे क्योकि दोनों का चोली–दामन का साथ है।
- भारतीय राष्ट्रभक्त एवं देशभक्त ऐसे हैं जो अपने देशवासियों के साथ इन्सानियत से भी तुच्छ व्यवहार होते हुए भी खुली आंखों से देखते रहते हैं। परंतु ऐसे देशभक्तों की मानवता उसके विरूद्ध कभी भी व्यक्त नहीं की जाती।
- इस देश में कोई भी कारण न होते हुए करोड़ों इन्सानों से इन्सानियत के अधिकार छीने गए हैं यह इन देशभक्तों को पता होता है, किन्तु फिर भी उनकी संवेदना जागृत नहीं होती।
- बैरिस्टरी की योग्यता हासिल कर के जब मैं इंग्लैंड से वापस आया तो मुझे जिला जज बनने का प्रस्ताव इस वचनबद्धता के साथ दिया गया कि तीन वर्ष के अन्दर उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बना दिया जायेगा। उस समय तो मैं सौ रूपये प्रतिमाह भी नहीं कमा रहा था। मैं बम्बई में गरीबों के लिए रिहायशी स्थान वाली ''चाल'' के एक छोटे से कमरे में रहता

था। फिर भी मैंने उस प्रस्ताव को सिर्फ इसलिए अस्वीकार कर दिया था क्योंकि उस नौकरी को स्वीकार कर लेने पर बहुत ज्यादा वेतन मिलने की वजह से हालांकि मेरा सम्पूर्ण जीवन तो आर्थिक रूप से निश्चिंत हो जाता लेकिन मेरे जीवन के उदेश्य अर्थात अपने लोगों का उत्थान और कल्याण के मार्ग में वह स्वाभाविक रूप से बाधा डालता।

- मनुष्य को अपने समाज के लोगों की सेवा के खातिर और उन्हीं की सेवा में जीना–मरना चाहिये।
- मैं जहाँ कहीं भी और किन्हीं भी लोगों के बीच क्यों न रहूँ मैं अपने लोगों को कभी नहीं भुला सकता और अपनी अलग पहचान कभी नहीं गवां सकता।
- मैं ऐसे लोगों का सहयोग तो हरगिज नही करूंगाँ जो मीठी–मीठी बाते करते हुए दिखावा तो करते हैं हितैषी होने का परन्तु जिन के इरादे और कारनामे हमारे लोगों के हितों के निहायत खिलाफ होते हैं।
- चमार, भंगी इत्यादी सभी बराबर हैं। हम सब एक जाति और एक जन हैं। हमें इक्ट्ठा होना चाहिये और किसी को दूसरे से अलग नहीं समझना चाहिये। हमें आपस में दुराव–टकराव और लड़ाई–झगड़ा बिल्कुल नहीं करना चाहिये।
- एक समय था, जब हम, जिन्हें अछूत कहकर पुकारा जाता था बहुत प्रगतिशील थे, दूसरी उन्नत जातियों से भी कहीं आगे सम्पूर्ण देश पर हमारे ही लोगों का दबदबा और शासन था।
- जाति अभिमानी हिन्दू कोरे प्रस्तावों से नहीं समझेंगे अपितु जब इन्हें अनुभव होने लगेगा कि अब अछूतों से दुर्व्यवहार करना खतरे से खाली नहीं है तभी उनके अत्याचारी हाथ थमेंगे।

राजनीति विचार

- व्यक्तिगत दृष्टि से इंसान की कोई कीमत नहीं होती। आज मुझे राजनीतिक क्षेत्र में जो कुछ मान–सम्मान मिला है, उसका एकमात्र कारण मेरे पीछे खड़ी संगठन शक्ति ही है।
- स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद यदि हम दलित–पीड़ित ही रहते हैं, तो ऐसी स्वतंत्रता हमारे किस काम की ?
- मुझे शून्य से सभी कुछ बनाना पड़ा है। तथापि अभी तक जो हुआ वह मैंने केवल पौधा लगाया, वृक्ष बनने का काम अभी बाकी है, और उसका सारा दायित्व हमारे नेताओं का है।
- अगर आप लोगों को राजनैतिक सत्ता में उचित हिस्सेदारी करनी है तो आप लोगों को एकजुट होकर एक ठोस इकाई के रूप में संगठित होना होगा तभी देश के भावी शासन में आप लोग अपने अधिकारों की लड़ाई सफलता पूर्वक लड़ पायेंगे।
- जब तक अनुसूचित जाति के लोगों के हाथों में राजनैतिक सत्ता–शक्ति की बागडोर नहीं आती है तब तक वे गरीबी के गर्त में डूबे रहेंगे और अपने लोगों की दशा में वांछित परिवर्तन लाने की आशा तो कतई नहीं कर पायेंगे।
- प्रलोभन की बलि पर चढ़े बिना हमें चुनाव लड़वाना आना चाहिए, उसी में हमारा हित है। कसाई के हरी घास दिखाते ही गाय उसकी ओर चली जाती हैं। उस बेचारी को यह भी नहीं मालूम होता कि वही उसका घात करने वाला है। इसलिए प्रलोभन बहुत बुरा होता है। इस प्रकार हमारे मतदाताओं और कार्यकर्ताओं को ऐसे प्रलोभनों से दूर ही रहना चाहिए।

- राजनैतिक सत्ता समस्त सामाजिक प्रगति की कुंजी है और अनुसूचित जातियों को तभी मुक्ति मिल सकती है जब वे स्वयं को संगठित कर के इस सत्ता को अपने कब्जे में लें।
- कोई भी सरकार जो अपने दायित्वों के प्रति गंभीर है, गरीबों से यह नहीं कह सकती कि वह उन्हें ये सुविधाएं नहीं दे सकती।
- यदि हिन्दूराज हकीकत बन जाता है तो यह निस्संदेह देश की आजादी, बराबरी और भातृभाव के लिए खतरा है। इस कारण यह (हिन्दूवाद) लोकतंत्र से मेल नहीं खाता।
- यदि हम एक संयुक्त, अभिन्न और आधुनिक भारत बनाना चाहतें हैं तो सभी धर्मों के धार्मिक ग्रंथों के प्रभुत्व का अंत होना जरूरी है।
- भारतवर्ष आज राजनीतिक दृष्टि से बीमार आदमी जैसा है। भारतवर्ष का जिक्र आते ही हमें सूजन के कारण पेट फूला हुआ सा लगता है। मानों हाथ–पांव में मांस नहीं रहा और वे सूख कर लकड़ी जैसे हो गए हैं। चेहरा पीला पड़ चुका, आंखें भीतर को धंसी हुई और सीने की हड्डियों के ढांचे वाला मरीज का चित्र दिमाग में आता है। ऐसे दुर्बल देश में लोकतंत्र को सही ढंग से चलाने की ताकत नहीं। लेकिन लोकतंत्र की इच्छा पूरी करनी हो तो इसमें ताकत का होना जरूरी है और वह अच्छी दवाई के सेवन से ही संभव है। लेकिन सिर्फ दवाई सेवन करना ही पर्याप्त नहीं। सभी को ज्ञात होगा कि किसी भी औषधि का सेवन करने से पहले पूरे पेट का साफ होना जरूरी है। पेट में ही खराबी है। उसमें कई हजारों वर्षों का ब्राह्मणों के धर्म का मल विद्यमान है जो हकीम या डॉक्टर सबसे पहले इस गंदगी को साफ करने की खुराक देगा, वही इस देश के लोकतंत्र की स्थापना में सहायक होगा। ऐसा सफल हकीम या डॉक्टर गौतम बुद्ध के अतिरिक्त दूसरा कोई नही।

- जहां सामाजिक स्वतंत्रता की शून्यता है वहां राजनीतिक स्वतंत्रता सार्थक नहीं हो सकती।
- आप जिन स्वामियों के लिए हल चलाते हो, वे आपको नीचा दिखाते हैं। आप मेहनत और ध्यान से जो सुंदर वस्त्र बुनते हो वे आपके दुश्मन पहनते हैं। बहुत सुस्ता चुके, अब शेरों की तरह उठो पृथ्वी पर पड़ी ओस की तरह अपनी बेड़ियों को उतार फेंको। आप बहुत ज्यादा हैं और वे बहुत कम हैं।
- यदि ब्राह्मणों के हाथों में सत्ता दे दी गई तो जितना विरोध अछूत ब्रिटिश सरकार का करते हैं उससे अधिक विरोध ब्राह्मणों की सरकार का करेंगे जो पूर्णतः न्यायोचित होगा।
- कांग्रेस के स्वराज का अछूतों के लिए क्या अर्थ है ? यह निर्विवाद सत्य है कि स्वराज से अछूतों के दुःख बढ़ेंगे। अछूतों को विरोधी प्रशासन का ही सामना नहीं करना पड़ेगा अपितु उन्हें विरोधी अथवा उदासीन विधानमंडल, निष्ठुर कार्यपालिका और एक ऐसे अनियंत्रित तथा बेलगाम प्रशासन का सामना करना पड़ेगा जो अछूतों की ओर कठोर, विषाक्त और अन्यायपूर्ण भावना रखेगा।
- कांग्रेस शासक वर्ग की आजादी के लिए लड़ रही है। हमें यह जान लेना चाहिए कि भारत में शासक वर्ग कौन है?
- गांधी तथा जिन्ना की मैंने जो आलोचना की है, उसके लिए मैं कोई क्षमा–याचना या खेद प्रकट नहीं करता, क्योंकि इन दोनों महानुभावों ने भारत की राजनीतिक प्रगति को ठप्प कर दिया।
- आपको याद रखना चाहिये कि किसी समाज का बहुजन होना ही काफी नहीं है। जागृत, शिक्षित, स्वाभिमानी होने से ही उसकी शक्ति बढ़ेगी।
- मिल मालिक या किसी सेठ साहूकार ने आपको कोई लालच दिया और आपने अपने मत बेच दिए तो आपके समाज की विशेषता समाप्त हो जाएगी।

- अपने वर्ग के अलावा किराए का कोई आदमी आपका कोई कल्याण नहीं करेगा। आपसी मतभेद भुलाकर आप लोगों को अपने संगठन का विस्तार करना चाहिए तथा परिस्थिति से परिचित होना चाहिए।
- वर्तमान में सभी सुख का आधार कानून है। इसलिए हम सभी को कानून बनाने की शक्ति पूरी तरह से हस्तगत कर लेनी चाहिए। इसलिए, जप, तप, पूजा–अर्चना करना, इस ओर से अपना ध्यान हटाकर राजनीति का मार्ग पकड़ना यही आप लोगों की उन्नति का मार्ग है।
- यदि देश की अनुसूचित जातियों और पिछड़े वर्गों के लोग अपने समान और साझे शत्रु के खिलाफ लक्ष्य निर्धारित करके एक जुट हो जायें तो वे राजनैतिक सत्ता अपनी मुट्ठी में कर सकते है।
- अनुसूचित जाति तथा पिछड़े वर्ग के लोगों को अपनी ताकत का अहसास ही नहीं है जिसका नतीजा है कि शासन में ऊँची जातियों का वर्चस्व कायम है।
- अनुसूचित जातियों को अपने प्रति पूर्वाग्रह एवं पक्षपात रूप से बनते खराब कानूनों का उतना ज्यादा डर नही हैं जितना कि कानून को क्रियान्वित करने वाले पक्षपाती कुशासन का है।
- अनुसूचित जातियों और पिछड़े वर्गो के लोग देश का बहुसंख्यक और बहुजन होने के नाते बहुमत की हैसियत रखते हैं तो फिर कोई कारण नहीं कि वे इस देश पर शासन क्यों न करें।
- वयस्क मताधिकार की व्यवस्था के कारण जनमत की ताकत तो आप लोगों के ही हाथ में है। राजनैतिक शक्ति–सत्ता का लक्ष्य हासिल करने के लिए आप लोगों को सिर्फ संगठित होकर एकजुटता कायम करने की जरूरत है।

- गरीबी के कारण हम अधिकारियों को अपने पक्ष में करने में असमर्थ होते हैं। लेकिन हम एक शक्ति तो प्राप्त कर ही सकते हैं और वह है राजनैतिक सत्ता की शक्ति। इस शक्ति को हमें जरूर विजित करना होगा। इस शक्ति से लैस होकर हम अपने लोगों के हितों की रक्षा कर सकते हैं।
- हम कभी भी अपने देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के विरोधी नहीं थे। परन्तु हम अपने एक प्रश्न का साफ–साफ और दो टूक उत्तर अवश्य चाहते थे। हमारा प्रश्न यह था कि स्वतंत्र भारत में हमारी हैसियत, कैफियत और किस्मत क्या होगी? मैंने यही प्रश्न गाँधी तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं के सामने रखा था। हम पहले यह जान लेना चाहते थे कि ''उनके स्वराज'' में ''हमारी'' क्या स्थिति होगी? क्या हमारे ऊपर किये जाने वाले अत्याचारों का सिलसिला बन्द हो जायेगा? क्या हमारे बच्चों को शिक्षा की पूर्ण सुविधायें उपलब्ध हो जायेंगी? क्या हमारे शोषण या उत्पीड़न का दमन चक्र थम जायेगा? क्या हमारी महिलाओं की आबरू सुरक्षित रहेगी? इन ज्वलन्त प्रश्नों का साफ–साफ और सन्तोषजनक जवाब देने की जहमत न तो गाँधी ने की थी और न किसी दीगर नेता ने।
- वर्तमान ''स्वराज'' तो उन्हीं का राज या स्वराज है, हम लोग तो अभी भी उन्हीं के गुलाम है। हमारी गुलामी कोई हमारी अपनी ईजाद की हुई नहीं है बल्कि उन्हीं की गढ़ी हुई करतूत है।
- अन्य राजनीतिक संगठनों के कुछ ऐसे एजेंट है, जो हमारे लोगों को झूठे प्रलोभन देकर, उनसे झूठे वायदे करके और झूठे प्रचार से उन्हें बहलाते रहते हैं। यह हमारे अपने ही लोगों की अज्ञानता है, जो उस संकट काल को नहीं जानते, जिसमें हम रह रहे हैं और वे यह भी नहीं जानते कि हमारी राजनीतिक पूर्ति के लिए संगठन का कितना महत्त्व है।

हमारे प्रतिनिधि

- केवल विधानसभा में प्रतिनिधि भेजकर आप लोगों का कुछ होने वाला नहीं। चुनकर जाने के बाद वे क्या करतें है उस पर भी आप लोंगों को नजर रखनी चाहिए।

- अनुसूचित जातियों के बीच जिनकी न तो कोई पूछ है और न सामाजिक आधार या महत्व ही, वही व्यक्ति आरक्षित स्थानों पर सिर्फ सवर्णों के वोटों तथा समर्थन के बदौलत चुनाव जीत जाते हैं।

- चुनाव में बहुत से अछूत चुने गये हैं। मैं इन विधायकों और सांसदों से इतना ही पूछना चाहूँगा कि विगत वर्षों के दौरान उन्होंने अपने लोगों के लिए क्या किया है?

- क्या इन तथाकथित सदस्यों में से किसी ने सदन के अन्दर कभी कोई प्रश्न पूछा है, क्या कोई प्रस्ताव अथवा विधेयक प्रस्तुत किया है? कोई विदेशी व्यक्ति संसद के कामकाज का लेखा जोखा देखते हुये इन ''हरिजन'' सदस्यों की ''चुप्पी'' से तो बड़ी आसानी से ऐसा निष्कर्ष निकाल सकता है कि इन हरिजनों पर कहीं किसी प्रकार की जुल्म–ज्यादती होती ही नहीं है। और उन्हें किसी प्रकार की कोई तकलीफ और शिकायत कतई नहीं है जबकि ईमानदारी से कहा जाये तो सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत है।

- हमें विधायिका में ऐसे प्रतिनिधि भेजने चाहिये जो वहां हमारे दुख–दर्दों की आवाज पूरी निर्भीकता से उठा सकें।

- क्या आप लोग अभी भी पिछड़े ही बने रहना चाहते हैं और इन उच्च जातीय हिन्दुओं की गुलामी में ही पड़े रहना चाहते हैं?

- आप लोगों को यह देखना चाहिये कि हमारे वोटों से सिर्फ हमारे सही और सच्चे प्रतिनिधि ही चुने जायें, और कोई कतई नहीं। तभी आप लोगों के संविधान में समाहित किये गये अधिकार सुरक्षित रह सकते हैं।
- अगर प्रान्तीय विधान सभाओं ओर लोकसभा के लिये हमारे सच्चे प्रतिनिधि चुन कर नहीं जाते तो फिर हम स्वतंत्रता को उपभोग कतई नहीं कर सकते। हमारे लोगों के लिये तो स्वतंत्रता एक ढोंग और ढकोसला मात्र होगी। वह स्वतंत्रता तो सिर्फ उच्च जातीय लोगों की ही स्वतंत्रता होगी, न कि हमारे लोगों की।
- अनुसूचित जातियों के लिये आरक्षित सीटों पर अपने गुलाम पिट्ठुओं को अपनी पार्टी का टिकट दे कर खड़ा कर रहे हैं। चुने गये ये लोग भला हमारे हितों की रक्षा कर ही कैसे सकते हैं जब उन्हें अपने सवर्ण आकाओं की मर्जी के अनुसार उन्हीं के इशारों पर चलना पड़ेगा? वे हमारे लिये क्या कर सकते हैं।
- किसी पार्टी में शामिल होकर उसके सामने महज दुम हिला कर मिजाजपुर्सी करने वाले पिछलग्गुओं जैसा बन जाने से कोई फायदा नहीं है। उस से तो केवल कोई पद ही प्राप्त होता है, सत्ता और शक्ति तो हरगिज नहीं।
- मैं आप लोगों से बार–बार कहता हूं कि जो प्रतिनिधि आप विधानसभा में चुनकर भेजेंगे वह लायक होना चाहिये।

कम्युनल अवार्ड

- भौगोलिक निर्वाचन क्षेत्र बना दिए जाने से हिन्दुओं को राजनीतिक सत्ता हड़पने का अवसर मिल जाएगा। यदि सांप्रदायिक निर्वाचन क्षेत्र बनाए जाएंगे तो यह सत्ता अछूतों के हाथों में रहेगी।
- अछूतों की मांग है कि उनके मतदाता अलग हों। अलग मतदाताओं का अर्थ है ऐसे मतदाता जो केवल अछूत हों और वे ही विधायिका के अछूत प्रतिनिधि को अलग मतदान से चुनें।
- कम्युनल अवार्ड कोई खराब चीज नहीं है, यह जहर नहीं है। यह इस देश में विभिन्न वर्गों की सुरक्षा करने के लिए श्रेष्ठ व्यवस्था है। मैं इसे संविधान की विकृति नहीं कहूंगा।
- गाँधी ने तो हमें उन्हीं राजनैतिक अधिकारों से पृथक निर्वाचक मण्डल से वंचित कराने के लिए आमरण अनशन शुरू करके जान की बाजी लगा दी जिन्हें हमने आधुनिक भारत के इतिहास में बड़ी जद्दोजहद के बाद पहली बार प्राप्त किया था।
- गाँधी अछूतों को राजनैतिक अधिकार प्राप्त कराने के पक्ष में बिल्कुल नहीं थे क्योंकि उन्हें डर था कि ऐसा करने से अछूतों के दिलो–दिमाग में महत्वाकांक्षायें बढ़ने लगेंगी। वे तो उन्हें चन्द रहमदिल आकाओं–यानी सवर्ण हिन्दुओं के रहमोकरम के हवाले कर देना चाहते थे ताकि उन्हीं पर निर्भर हो कर रहें।
- गाँधी और अन्य हिन्दू नेताओं की बातों एवं आश्वासनों पर भरोसा कर के हमने उनकी जान बचाने की खातिर अपने महत्वपूर्ण अधिकारों की बलि चढ़ा दी। नतीजा आप सब लोगों की आँखों के सामने ही है। यह शुद्ध धोखेबाजी और दगाबाजी की दुखभरी दास्तान है।

चुनाव

- अपने वोट की कीमत नमक मिर्च जितनी मत समझो। तुम्हारे प्राण जितनी बल्कि उससे भी कहीं अधिक आपके वोट की कीमत है, यह बात मत भूलो। गलत उम्मीदवार को वोट देना, कसाई के हाथ में बकरे द्वारा छुरी देने जैसा होगा।
- अनुसूचित जाति के लोगों से मैं अपील करना चाहता हूँ कि वे चुनावों को अनुसूचित जातियों के लिये जीवन और मरण का प्रश्न समझें और आगे आने वाले समय में इसी भावना से प्रेरित होकर काम करें हमें अपने उम्मीदवारों को जिताने में अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये।
- मतदान का दिन अनुसूचित जातियों के लिये जिन्दगी और मौत का दिन है।
- चुनाव में हमारी सफलता का सारा दारोमदार स्वयं हमारे प्रत्येक स्त्री–पुरूष मतदाता के द्वारा अचूक मतदान करने पर ही होगा। मतदान के दिन जरूरी से जरूरी काम–काज छोड़ कर आप लोग अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें।

नारी

- बहनो! घर में कोई भी अमंगल कार्य मत होने दीजिए। ज्ञान और विद्या पाना केवल पुरूषों का ही अधिकार नहीं है, वह स्त्रियों का भी समान अधिकार है। आप लोगों को यदि भावी पीढ़ी में सुधार करना है तो लड़कियों को अवश्य शिक्षित करो।
- बहनों और माताओं! आपका पति और बच्चा शराबी है तो उसे खाने को कुछ भी मत दो।
- अपने बच्चों को पाठशाला भेजो। पुरूष के लिए शिक्षा जितनी आवश्यक है उतनी ही वह महिलाओं के लिए भी है। यदि आप लिखने–पढ़ने लगो तो बड़ी मात्रा में प्रगति होगी। जिस प्रकार आप होंगे उसी प्रकार आपके बच्चे भी होंगे। सद्गुण के मार्ग में बच्चों को अग्रसर करो। आपके बच्चे ऐसे बनें, जिनका संसार भर में नाम हो।
- मेरा महिलाओं को यही संदेश है कि, उन्हें पुरूषों के साथ सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करना चाहिए। पुरूष वर्ग से यदि स्त्रियां पीछे रहीं तो किसी भी समाज की प्रगति नहीं होने वाली। गाड़ी का एक पहिया यदि खराब रहा तो गाड़ी नहीं चल सकती। इसलिए स्त्रियों को पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहिए, अतः हमें स्वतंत्रता मिलने में देर नहीं लगेगी।
- मैं नारी उन्नति व नारी मुक्ति के लिए लड़ने वाला योद्धा रहा हूं। मैंने स्त्री की प्रतिष्ठा के लिऐ पर्याप्त संघर्ष भी किया है, जिसका मुझे गर्व है।
- हमारे आन्दोलन को तब तक सफलता नहीं मिल सकती जब तक की हमारे समुदाय की महिलायें भी आन्दोलन में पूरी सक्रियता से भाग लेकर तेज करने में मदद नहीं करेंगी।
- आपको अपने मुक्ति संघर्ष में अपने स्त्री वर्ग को पीछे नहीं रखना चाहिए

युवा

- बचपन से ही लेकर, जब मैंने यह समझना शुरू किया कि जीवन का अर्थ क्या है, मैंने अपने जीवन में हमेशा एक ही सिद्धांत का पालन किया है और वह सिद्धान्त है– अपने अछूत भाइयों की सेवा करना। मैं जहाँ कहीं भी और जिस हैसियत में भी रहा हूँ मैं हमेशा अपने भाईयों की बेहतरी के लिए विचार और कर्म करता रहा हूँ। मैंने इतना अधिक ध्यान किसी और समस्या पर नहीं दिया है। अछूतों के हितों की रक्षा करना ही पूर्व समय से मेरे जीवन का मकसद रहा है और भविष्य में भी वह जारी रहेगा। मोटी रकम वाले आकर्षक वेतन के साथ मुझे अनेक लुभावने पदों के प्रस्ताव दिये गये परन्तु मैंने उन सभी प्रस्तावों को ठुकरा दिया क्योंकि मेरे जीवन का एक ही उदेश्य है और वह उदेश्य है अपने लोगों की सेवा करना।
- मैं अपने विद्यार्थियों से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। आप लोग डिग्री लेकर नौकरी पाने के बाद अपने समाज के लिये क्या करेंगे ? आप लोगों को अपने घर–संसार में ही मग्न न होकर, अपने समाज की ओर भी ध्यान देना चाहिए। अपने समाज के लिए अपने वेतन से यथाशक्ति अधिकाधिक धन देना चाहिए।
- नवयुवकों तथा विद्यार्थियों से मेरा अनुरोध है कि वे अपने समुदाय की सेवा का भाव अपने मन में जगायें, समुदाय की बेहतरी का भावी भार उन्हीं के कन्धों पर होगा और वे किसी भी जगह और किसी भी हैसियत में क्यों न रहें, उन्हें इस बात को किसी भी हालत में हरगिज नहीं भूलना चाहिए।
- हमारे देश को आजादी मिल गई यह तभी मानना चाहिए जब ग्रामीण लोग, देवता, धर्म, जाति और अन्धविश्वास से छुटकारा पा जायेंगे।

- बाबासाहेब डा0 अम्बेडकर ने सयाजीराव गायकवाड़ से कहा था – महाराज! मैं अध्ययन कर पता लगाउंगा कि, जिस समाज में मेरा जन्म हुआ है, उस की ऐसी दुर्दशा क्यों है, और उसकी दुर्दशा के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करने की कोशिश करूंगा।
- मैं व्यक्तिगत तौर पर किसी भी कार्यकर्ता से प्रेम नहीं करता। प्रेम केवल उनके कार्य से ही करता हूँ। जो निस्वार्थ रूप से कार्य करता है वही मुझे अच्छा लगता है।
- अच्छे काम करने के लिए कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता होती है। हर तरक्की की कीमत अदा करनी पड़ती है और जो लोग इसके लिए त्याग करते हैं, उन्हें तरक्की के लाभ मिलते हैं।
- दलित युवाओं को मेरा पैगाम है कि एक तो वे शिक्षा और बुद्धि में किसी से कम न रहें। दूसरे, ऐशो–आराम में न पड़कर समाज का नेतृत्व करें। तीसरे, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी संभालें तथा समाज को जागृत और संगठित कर उसकी सच्ची सेवा करें।
- एक आत्म–सम्मानी व्यक्ति, तर्क की कसौटी पर यह निश्चित करता है कि अमुक बात अच्छी है या बुरी। तर्क बुद्धि ही उसे सच खोजने में सहायता करती है किसी महात्मा, देवता, ऋषि या पुराण का कथन सच खोजने में सहायता नहीं करता।

व्यक्तित्व विकास

- हम निम्न स्तर से बीच के स्तर पर आ चुके हैं, परंतु मंजिल अभी भी दूर ही है। हमें यह चढ़ाई चढ़नी है, इसलिए एकजुट होकर चढ़ना चाहिए। उसके लिए हमें त्याग और निष्ठापूर्वक सार्वजनिक कार्य में सहभागी होना चाहिए।
- यदि आप लोग शेर की तरह रहेंगे तो फिर आपके साथ कोई ज्यादती नहीं कर सकेगा। भेड़ों की बली हर कोई देता है, परंतु शेर की बली देने का कोई साहस भी नहीं करता।
- यदि हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय कर लें तो फिर कोई भी बाधा क्यों न हो ऐसी बाधाओं के बावजूद भी हम अपने लक्ष्य को हासिल करके ही रहेंगे।
- आप लोगों को अपनी शक्ति पर भरोसा करना चाहिये और यह भ्रान्ति मन से निकाल देनी चाहिये कि किसी अन्य समुदाय से आप किसी प्रकार हीन या कमतर हैं।
- अत्त दीपो भव (अपना दीपक स्वयं बनों)।
- आप लोगों को स्वच्छ रहना चाहिए। अच्छे वस्त्र पहनने चाहिए। आपका ओढ़ना–पहनना देखकर ही तुम्हारे प्रति प्रथम आदर की भावना पैदा होगी।
- जिस प्रकार आप लोगों का स्वच्छ रहना आवश्यक है, उसी प्रकार आप लोगों को स्वाभिमान से भी रहना चाहिए। मुझे अपने पैंरो में जगह दीजिए ऐसे विचार छोड़ देने चाहिएं। मर जाएंगे परंतु अपमान नहीं सहेंगे, ऐसा आप लोगों को कहना चाहिए।
- कार्य करने की वास्तविक स्वतंत्रता केवल वहीं पर होती है, जहां शोषण का समूल नाश कर दिया जाता है। जहां एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर अत्याचार नहीं किया जाता।

- (Low Aim is Crime) छोटा लक्ष्य अपराध है।
- कोई भी मनुष्य विद्या, प्रयत्न एवं परिश्रम द्वारा बुद्धिमान और पराक्रमी बन सकता है।
- महत्व अस्तित्व में बने रहने का नहीं है, बल्कि अस्तित्व की गुणवत्ता और उसके स्तर का है।
- ऐसी लम्बी जिंदगी जीने का भी क्या लाभ, जिसका कोई उद्देश्य न हो?
- गुलाम को गुलामी का एहसास करा दो, फिर वह स्वयं ही विद्रोह कर देगा।
- उन माता–पिता और पशुओं में कोई अंतर नहीं, जो अपनी संतान को अपने से अच्छी स्थिति में देखने की इच्छा नहीं रखते।
- आज तक हमारें लोगों की सोच थी कि हमारी दयनीय परिस्थिति का मूल कारण हमारी बुरी किस्मत है। किस्मत को बदलना हमारे हाथ में नही होने के कारण, जिस स्थिति में हम हैं, उसी में रहना चाहिए। वर्तमान पीढ़ी को यह बात समझ में आ रही है कि हमारी परिस्थिति का मूल कारण, ईश्वर की कृपा न होकर दूसरे लोगों के षडयंत्र हैं।
- मैं भारत में अनुसूचित जाति के समुदाय–वह समुदाय जो दो हजार वर्षों से भी ज्यादा समय से शासित, शोषित और उत्पीड़ित रहा है की स्वतंत्रता को अपेक्षाकृत ज्यादा अहमियत देता हूँ। देश के लिए स्वराज का कार्य करने की अपेक्षा मैं अपने समुदाय के उत्थान के लिये कार्य करने को ज्यादा प्राथमिकता और महत्त्व देता हूँ।
- स्वयं के प्रयासों से पौष्टिक आहार प्राप्त करना, ज्ञानार्जन के साधनों का विकास करके तथा अन्य प्रकार से इस लोक को

सुखकर बनाने के आवश्यक प्रश्नों की ओर बहुजन समाज के उदासीन होने के कारण इस देश का विकास कुंठित हो गया है।

- इस धरती की उत्तम वस्तुएं आकाश से नहीं गिरतीं, हरेक प्रगति की कीमत चुकानी पड़ती है और जो लोग उसका मूल्य चुकाते हैं, वही उसे प्राप्त कर सकते हैं।
- अपनी स्वतंत्रता को किसी महान व्यक्ति के आगें समर्पित मत करो।
- केवल अनुसूचित जातियों में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत में मैं वह पहला व्यक्ति था जो अर्थ शास्त्र में विदेश से Ph.D की डिग्री लेकर लौटा था।
- मैं कोई मिट्टी का लोंदा नहीं हूँ जिसे पानी के बहाव में घुला–गला कर बहाया–मिटाया जा सके। मैं तो एक चट्टान की मानिंद हूँ जो नदियों के बहाव की दिशा मोड़ दिया करती हैं।
- जब आप एक पेड़ लगाते हैं तो उसके कुछ समय के बाद ही फल मिल पाते हैं।
- पुस्तकें मुझे सिखाती हैं, नया मार्ग दिखाती हैं इसलिये मुझे आनन्द देती हैं।

अहिंसा

- मैं स्वयं अहिंसा में यकीन रखता हूं। किंतु मैं अहिंसा और नम्रता यानी दब्बूपन में भेद समझता हूं। दब्बूपन कमजोरी है और अपने ऊपर स्वयं ही लादा हुआ दब्बूपन कोई सदगुण नहीं होता ?
- अहिंसा में दो बातें होती हैं। पहली—सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और करूणा तथा दूसरी—दुष्ट कर्म करने वालों का संहार। अक्सर इस परिभाषा का दूसरा हिस्सा अनदेखा रह जाता है और उसे अनदेखा करने का ही यह परिणाम है कि, आज अहिंसा का सिद्धांत एक उपहास का विषय बन कर रह गया है।
- हम हिंसा में विश्वास नहीं करते। हम जानते हैं कि जब दंगा होगा तो ब्राह्मण भाग जायेगा और वह पकड़ा नहीं जायेगा। इसलिए हिंसा का रास्ता नहीं पकड़ा।
- जहाँ तक हमारा प्रश्न है हम यह उम्मीद नहीं रखते कि हम स्वर्ग में जाकर ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करेगें।

गाँव

- लगता है हमारे लोगों को अपने बाप—दादाओं के गाँवों से बहुत लगाव है जिस गांव में उन्हे अपमानपूर्ण और स्वाभिमानशून्य जीवन जीना पड़ता है, वह गांव किस काम का।
- जब तक हमारे लोग गांव छोडकर शहरों में नही बसेंगे तब तक उनके जीवन में सुधार नहीं होगा।
- गांव में हमारे साथ कुत्ते/बिल्लियों से भी बुरा व्यवहार किया जाता है, जहां कदम—कदम पर हमारा निरादर होता है।
- ग्रामीण भाईयों को चाहिए कि वे ऐसे गांवों से निकल पड़ें और जहां कहीं शहरों के समीप या शहरों के बीच जमीन मिले वहां नये ग्राम बसाकर स्वाभिमानी जीवन बितायें।

आर्थिक विचार

- समाज का जो विकास होता है वह केवल राजनीति से ही नहीं होता, समाज उन्नति के और भी कई कारण होते हैं। उसमें से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुददे भी कम महत्वपूर्ण नहीं होते।
- भाईयों! आप लोग स्वच्छता से रहो। बुरे कार्य छोड़ दो। किसी के नौकर न बन कर स्वयं के पैरों पर खड़े रहना सीखो।
- पूंजीवाद को स्थापित करने में हिन्दू धर्म और उच्च जातियाँ अपराध करने जैसा कार्य कर रही हैं।
- अगर हम इज्जत के साथ इंसानों की तरह जीना चाहते हैं तो जरूरी है कि हम अपने ही पैरों पर खड़े हों।
- मैं आप लोगों में से प्रत्येक से आत्मनिर्भर बनने की और खुद अपने ही पैरों पर खड़े होने की अपेक्षा करता हूँ ताकि स्वतंत्र सामाजिक जीवन बिता सकें।
- हम दरअसल स्वतंत्र तभी हो पाते हैं जब अपना भरण–पोषण करने के लिए दूसरो पर निर्भर नहीं रहते हैं।
- किसी भी समुदाय के पास या तो सत्ता–बल होना चाहिये या फिर धन–बल होना चाहिये।

संगठन संबंधी विचार

- आपको अपने सभी मतभेद भुलाकर एक विचार पर चलना चाहिए तथा अपनी संगठन शक्ति मजबूत करनी चाहिए। तभी तुम्हें विजय हासिल हो सकती है।
- अभी भी हम मंजिल पर पहुंचे नहीं हैं। अभी हमारी नौका बीच मझधार में ही है। ऐसे में हमारी नौका कब डूब जाए, कह नहीं सकते। इसलिए आपसी झगड़े छोड़ दो। मेरा आन्दोलन जीवित रखो, सुसंगठित रहो। इसी में तुम्हारे उद्धार का मार्ग है।
- अपना संगठन तोड़कर केवल दो चार लोग मिलकर नया संगठन न बनाएं, ऐसा करना, अपना सर्वनाश करने जैसा होगा।
- यदि राजनैतिक लड़ाई में हिन्दू जीत जाते हैं और हम पराजित हो जाते हैं तो इसी तरह दबाये और कुचले जाते रहेंगे।
- आप लोगों के लिये सलाह के मेरे अन्तिम शब्द है–''शिक्षित करो, संघर्ष करो और संगठित करो, स्वयं में विश्वास रखो ओर कभी भी आशा मत छोड़ो''।
- स्वयं का घर उजाड़कर दूसरे के महलों में जाने का ख्याल निरी मूर्खता है। अपनी कुटिया ही स्वच्छ रखो, संगठित रहो।
- हमें ऐसे अछूतों को खोजना ही होगा, जो अपनी शिकायतों और हितों को प्रस्तुत कर सकें। दूसरा, हमें उन्हें इतनी संख्या में खोजना होगा कि वे ऐसी शक्ति बन सकें कि अपने दुःख –दर्द के बारे में मांग प्रस्तुत कर सकें।
- यदि हम इसी तरह संगठित रहे और एक महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर परस्पर एक–दूसरे को सहायता करते रहें तो मुझे विश्वास है कि किसी भी जुल्म से हमें इस देश में घबराने का कोई कारण नहीं रहेगा।

- यदि आप लोग अपनों को संगठित करें तो आप लोग भी सरकार पर कब्जा कर सकते हैं।
- मैं बस यही चाहता हूँ कि हमारे लोग इन सवर्णो के अन्याय–अपमान और उत्पीड़न–अत्याचार के खिलाफ लड़ने के लिए अपने लोगों को संगठित करें।

ब्राह्मणवाद

- ब्राह्मणों ने हमें शास्त्रों और पुराणों की सहायता से शूद्र बनाया। हमने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। हमने ही खुदाई करके तालाब बनाये, मन्दिर निर्माण किये हैं और धन दौलत दान में दिये हैं परन्तु इन सबका आनन्द मात्र ब्राह्मण ही ले रहे हैं।
- ब्राह्मणों ने हमें अनन्त काल के लिए शूद्र बनाने का षड्यन्त्र रचा है, जिसके परिणामस्वरूप हमें आर्य धर्म का गुलाम बनाया गया और उन्होंने अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए मन्दिर, ईश्वर और देवी देवताओं की रचना की।
- सभी मनुष्य समान रूप से पैदा हो रहे हैं, तो अकेले ब्राह्मण अपने को ऊंचा व अन्यों को नीचा कैसे ठहरा सकते हैं। परियाह या पंचमा (अछूत) कहकर मूर्खता, अभद्रता एवं कपटपूर्ण खेल लोगों के साथ खेला जा रहा है।

लाचार देवता

- आपने देवताओं को मुक्त क्यों नहीं किया है। आप मन्दिर गोपुरम क्यों चाहते हैं? आप पूजा करना क्यों चाहते हैं? आप पत्नी और रखैल क्यों रखना चाहते हैं? आप सोने के गहने और हीरे के आभूषण क्यों चाहते हैं? आप क्या खाते हैं? क्या आप देवदासियों को भोग रहें हैं, जो अपने को आपकी पत्नियां कहकर पुकारती हैं? हमने ईश्वर को नहीं छोड़ा, हमने उसे गोलियों की बौछार के समान प्रश्नों से थका दिया है। कोई भी देवता उत्तर देने के लिए आगे नहीं आया। देवता इसका विरोध करने भी नहीं आया और कोई देवता हमारे उपर आक्रमण करने या हमें दंडित करने भी नहीं आया।
- हम देवता को चुनौती दे पूछ रहे हैं कि उन्होंने लोगों की भलाई के लिए क्या किया? हम यह भी पूछते हैं कि क्या वास्तव में वह देवता है या मात्र एक पत्थर। देवता ऐसे जुबान बन्द किये है और गतिहीन है जैसे हम हमारे आरोपों को स्वीकार कर रहें हैं। देवता अपनी मानहानि के लिए, हमारे खिलाफ किसी कोर्ट कचहरी में भी नहीं गया।

प्रेरक विचार

- अगर कोई यह कहने की हिम्मत करता है कि वह, वही बात कह रहा है जो बड़े लोगों ने कही या वह, वही बात कह रहा है जिसे देवताओं ने कहा, मैं उसे प्रथम दृष्टि में ही असामाजिक तत्व करार दूंगा।
- ब्राह्मणों को हमारी कीमत पर किसी तरह की मौज–मस्ती करने का अधिकार नहीं है।
- सम्मानजनक जीवन जीना मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है।
- आप इस विचार को त्याग दें कि आपके दुःख पूर्व निर्धारित हैं और आपकी गरीबी आपके पिछले जन्मों के कर्मो का फल है।
- दलितों झुको नहीं, बल्कि इस जाति व्यवस्था को नष्ट करने के लिए आवाज बुलन्द करों।
- मनुष्य का उत्थान आसमान से नहीं टपकता, उसके लिये शिक्षा और उद्यम आवश्यक है।
- खाली, ढेर सारे ग्रन्थ पढ़ने की उपयोगिता नहीं है। ग्रंथ पढ़कर उसका रस ग्रहण करने की शक्ति होनी चाहिए।
- भाग्य पर विश्वास न करो, अपनी शक्ति पर विश्वास करो, तभी तुम अपना जीवन सुखी बना सकते हो।
- आपकी सहायता कोई महात्मा नहीं करेगा, बल्कि अपनी सहायता स्वयं करनी होगी। क्योंकि बहुत से महात्मा इस देश में हुए और चले गये, पर अछूत, अछूत ही बने रहे।
- अपने दुःखी, दरिद्र और अज्ञानी बन्धुओं की सेवा करना, हर शिक्षित दलित की जिम्मेदारी है।
- चरित्रहीन व्यक्ति कितना भी विद्वान हो, वह पशु से भी खतरनाक माना जायेगा।

- शिक्षा के बिना आपकी गुलामी और दरिद्रता दूर नहीं हो सकती।
- न्याय और अधिकार मांगने से नहीं मिलते, उन्हें लड़कर छीना जाता है।
- मनुष्य नश्वर है। प्रत्येक व्यक्ति को एक दिन मरना है, अतः जीवन के रहते प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन आदर्श और सम्माननीय बनाये रखने के यत्न करने चाहिये।
- सम्मान के साथ जीवित रहना सीखों। संसार में कुछ करने की भावना अपने में जागृत करो। केवल वे ही लोग आगे बढ़ते हैं, जो प्रयत्न एवं परिश्रम करते है।
- जाओ और अपने घर की दीवारों पर लिख दो कि हमें इस देश की शासक जमात बनना है।
- अपने बच्चों को शिक्षित करने में किसी भी तरह की कोताही नहीं बरतों।
- अपने समाज पर हजारों वर्षों से होने वाले अत्याचार और अन्याय का निवारण करने के काम को आज की युवा पीढ़ी को अपने सिर पर लेना होगा।
- जिस समाज में हमारा जन्म हुआ है उस समाज का उद्धार करना हमारा मुख्य कर्त्तव्य है।
- आपको महत्वाकांक्षी बनना चाहिए। महत्वाकांक्षा ही उन्नति की सीढ़ी है।
- साहस ही स्वतंत्रता पाने का राज है और साहस पैदा होता है, व्यक्तियों के एक दल में परिवर्तित होने से।
- इतिहास को भूल जाने वाले कभी इतिहास नहीं बना सकते।
- अस्पृश्यता का होना किसी भी समाज के लिए सबसे भंयकर रोग है।

बुद्धिजीवी वर्ग

- बुद्धिजीवी वर्ग वह है, जो दूरदर्शी होता है सलाह दे सकता है और नेतृत्व प्रदान कर सकता है, किसी भी देश का भविष्य उसके बुद्धिजीवी वर्ग पर निर्भर होता है, यदि बुद्धिजीवी वर्ग ईमानदार, स्वतंत्र और निष्पक्ष है, तो उस पर भरोसा किया जा सकता है कि संकटकाल में वह पहल करेगा और उचित नेतृत्व प्रदान करेगा।

राष्ट्रीयता

राष्ट्रवाद तभी औचित्य ग्रहण कर सकता है, जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग का अन्तर भुलाकर उनमें सामाजिक भ्रातृत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाए।

राष्ट्र के संदर्भ में राष्ट्रीयता का अर्थ होना चाहिए सामाजिक एकता की दृढ़ भावना।

नागपुर में बोधिसत्व बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा दी गई 22 प्रतिज्ञाएँ

1. मैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश को कभी ईश्वर नही मानूंगा, और न उनकी पूजा करूंगा।
2. मैं राम और कृष्ण को ईश्वर नहीं मानूंगा और न ही कभी उनकी पूजा करूंगा।
3. मैं गौरी, गणपति इत्यादि हिन्दू धर्म के किसी भी देवी देवता को नहीं मानूंगा, और न ही उनकी पूजा करूंगा।
4. ईश्वर ने कभी अवतार लिया है। मैं इस बात पर कभी विश्वास नहीं करूंगा
5. मैं इसें कभी नहीं मानूंगा कि भगवान बुद्ध विष्णु के अवतार हैं। मैं ऐसे प्रचार को पागलपन का झूठा प्रचार समझूंगा।
6. मैं श्राद्ध कभी नहीं करूंगा और न कभी पिंडदान करूंगा।
7. मैं बौद्ध धर्म के विरूद्ध किसी भी बात को नहीं मानूंगा।
8. मैं कोई भी क्रिया–कर्म ब्राह्मणों के हाथों से नहीं कराऊंगा।
9. मैं इस सिद्धान्त को मानूंगा कि सभी मनुष्य एक है।
10. मैं समानता की स्थापना के लिए प्रयत्न करूंगा।
11. मैं भगवान बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का पूर्ण रूप से पालन करूंगा।
12. मैं भगवान बुद्ध की बताई दस पारमिताओं का पूर्ण रूप से पालन करूंगा।
13. मैं प्राणी मात्र पर दया रखूंगा और उनका पालन करूंगा।

14. मैं चोरी नहीं करूंगा।
15. मैं झूठ नहीं बोलूंगा।
16. मैं व्यभिचार नहीं कंरूगा।
17. मैं शराब आदि कोई नशा नहीं करूंगा।
18. मैं अपने जीवन को बौद्ध धर्म के तीन तत्वों अर्थात ज्ञान, शील और समता पर ढालने का प्रयत्न करूंगा।
19. मैं मनुष्य मात्र के उत्कर्ष के लिए हानिकारक और मनुष्य मात्र को असमान व नीच मानने वाले हिन्दू धर्म का पूरी तरह त्याग करता हूँ और बौद्ध धम्म को स्वीकार करता हूँ।
20. मेरा विश्वास है कि बौद्ध धम्म ही सही धम्म है।
21. मैं यह मानता हूँ कि अब मेरा जीवन बदल गया है।
22. मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से मैं बौद्ध धम्म की शिक्षाओं के अनुसार ही आचरण करूंगा।

अंतिम संदेश

मैंने तुम्हारे लिए जो कुछ भी किया है, वह बेहद मुसीबतों, अत्यन्त दुखों और बेशुमार विरोधियों का मुकाबला करके किया है। यह कारवाँ आज जिस जगह पर है, इस जगह पर मैं इसे बड़ी मुसीबतों के साथ लाया हूँ। तुम्हारा कर्त्तव्य है कि यह कारवाँ सदा आगे ही बढ़ता रहे, बेशक कितनी रूकावटें क्यों न आये....पर किसी भी हालत में इसे पीछे न जाने दें। आप लोगों को मेरा यही अन्तिम सन्देश है।''